अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 2, अप्रैल–जून 2026, पृष्ठ 59–61
जर्नल वेबसाइटः
https://anubodhan.org
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n2.2026.060

भक्ति काव्य में निर्गुण साधनाः कबीर के संदर्भ में

राजश्री कुमारी [1]

प्राप्तिः 3 जून 2026 / स्वीकृतः 12 जून 2026 / प्रकाशित ऑनलाइन: 16 जून 2026
Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

सारांश

भक्तिकालीन निर्गुण धारा के सन्त कवि कबीरदास उन कवियों में अग्रगण्य हैं जो निर्गुण ईश्वर के उपासक हैं। कबीर ने निर्गुण निराकार परामात्मा के लिए अनेक नामों का प्रयोग किया है। एक ओर तो वे उसे अल्लाह, करीम, खुदा, रहमान, रहीम कहते हैं तो दूसरी ओर उसे केशव, माधव, जगदीश, हरि, गोविंद, नरहरि, राम आदि नामों से संबोधित करते हैं। कबीर के लिए यह सभी नाम एक ही है, अतः वे नाम के विवाद में नहीं पड़ना चाहते हैं। इतना वे अवश्य कहते हैं कि ''मेरे राम दशरथ पुत्र राम नहीं है।'' ईश्वर के जितने भी नाम हैं उनमें कबीर को राम नाम अधिक प्रिय है। कबीर दास का ब्रह्म निराकार तथा अद्वैत है। उनके अनुसार ''ब्रह्म तो अद्वैत है, एक है।'' जो ईश्वर को दो मानते हैं वह नरकगामी होंगे। कबीरदास ने ब्रह्म को संसार का कर्त्ता एवं 'सृजनहार' कहा है। उनकी निर्गुण भक्ति अवतारवाद में विश्वास नहीं करती। इसलिए वह निर्गुण ब्रह्म को अजन्मा कहते हैं। वे कहते हैं कि ''जो निर्गुण एवं निराकार है, सर्वव्यापी एवं सर्वातीत है, वह भला जन्म कैसे ले सकता है?'' वह बार–बार यह कहते हैं कि ब्रह्म अनादि एवं अनंत है। वे न जन्म लेते हैं, न मृत्यु को प्राप्त होते हैं। वे अविनाशी एवं पूर्ण है।

बीज शब्दः कबीर, निर्गुण भक्ति, एकेश्वरवाद

संत कबीर का काव्य का जितना ऐतिहासिक महत्व है उतना ही उसका समसामयिक प्रयोजन है। भक्ति काव्य के सुदीर्घ परंपरा में कबीर जैसी प्रासंगिकता और किसी कवि का नहीं है। उन्होंने परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया है। साथ ही चिंतन के कई नए आयाम भी विकसित किए हैं। वह ऐसे प्रथम साधक है, जिन्होंने कागद की लेखी (शास्त्र) के साथ 'आँखिन की देखी, अच्छी लोक अनुभव को महत्व दिया था। कबीर ने निर्गुण तत्व का चिंतन करते हुए उसे वेदांत और एकेश्वर दर्शन के साथ–साथ लोक जीवन से भी जोड़ा। आत्मा–परमात्मा, ब्रह्म, जीव, जगत, माया को दूल्हा दुल्हन के रूपक के माध्यम से प्रस्तुत किया ताकि जनसाधारण उसे हृदयंगम कर सके।

भक्ति काल के प्रमुख कवि कबीरदास ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना करते हुए समस्त धर्मो के अनुयायियों को एक मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया है। उनकी कविता का मूल स्वर भक्ति है। भक्ति ही उनके काव्य और जीवन की प्रतिबद्धता और प्राण थी। ईश्वरानुराग ही उनका सर्वस्व थ। भक्ति के गर्भ से ही उनकी कविता की उत्पत्ति हुई है। इतना ही नहीं, कबीर भक्ति को ही भवसागर से मुक्ति का साधन मानते है। कबीर की भक्ति शास्त्रानुमोदित भक्ति नहीं है, बल्कि व्यावहारिक जीवन की साधुता और सहजता से समन्वित है, ''भाव भक्ति'' है। वह जाति–पाति, नाम–धाम, चमक–दमक, दिखावा–पहनावा आदि पर ध्यान नहीं देते। भक्ति को इन सब से उपर की वस्तु मानते हैं। अतः कबीर

[1] शोध छात्रा, विश्वविद्यालय इतिहास विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

✉ राजश्री कुमारी, E-mail: rajshreekumari869@gmail.com

पहले भक्त फिर कवि है। उनके द्वारा रचित साखी, सबद और रमैनी में कवित्व की शक्ति समाहित है। उन्होंने अपना पंथ और दर्शन स्वयं ही स्वानुभूति के सहारे निर्मित किया है। इसी चिंतन के कारण कबीर ने कहा है कि दर्शन का दर्पण जब तक स्वानुभूति के प्रकाश से प्रकाशित नहीं होता है, तब तक साधक को सत्यस्वरूप का सुदर्शन प्राप्त नहीं हो सकता है।

निर्गुण उपासना

कबीर निराकार ब्रह्म के उपासक हैं। उन्होंने सर्व–व्यापी, सर्वशक्तिमान निर्गुण की उपासना की है। उनकी मान्यता रही है कि वह फूलों की सुगंध से भी पतला, अजन्मा और निर्विकार है, वह विश्व के कण–कण में है। उसे कहीं बाहर ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। जैसे मृग की नाभि में कस्तूरी छिपी रहती है और मृग उस सुगंध का स्रोत बाहर ढूँढने का प्रयास करता है, उसी प्रकार मनुष्य राम को जगह–जगह ढूँढता है जबकि वह उसके भीतर ही विद्यमान होता है।

कस्तूरी कुण्डलि बसै, मृग ढूंढे वन माहिं।
ऐसे घट–घट राम है, दुनिया देखे नाहिं।

इस तरह कबीर दास ने ऐसे ईश्वर को सर्वव्यापी होने पर बल दिया है। वह मानते हैं कि ईश्वर कण–कण में समाया है, हर मन में उसका निवास है। इसलिए उसे ढूँढने की आवश्यकता नहीं है। उसे एकाग्र मन से याद करने की आवश्यकता है।

प्रियतम को पतिया लिखूँ, को कही होय विदेस।
तन में, मन में, नैन में ताकौ कहा सन्देश।

इस दोहे से तात्पर्य है कि हमारा परमात्मा सदा हमारे अंग संग है, तो उस की पूजा अर्चना कहीं भी, कभी भी की जा सकती हैं, तो वह किसी भी नियम कानून से परे है।

एकेश्वरवाद

कबीर ने बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध किया और एकेश्वरवाद का संदेश सुनाया। उनके अनुसार ब्रह्म ने ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि को बनाया है। अवतार तो जन्म–मरण और कर्म के बंधन से ग्रसित हैं। कबीर के काव्य में परमात्मा के प्रति अलौकिक प्रणयानुभूति की अभिव्यक्ति की गई है। कबीर वैसे तो खंडन–मंडन की राह पर चलते रहे और हिन्दू–मुसलमानों को खरी–खोटी सुनाते रहे पर अपनी रहस्यवादी रचनाओं में से वे अत्यंत मृदुल और कोमल दिखाई देते हैं। कबीर के रहस्यवाद पर शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव हैं –

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है भीतर बाहर पानी।
फूटा कुम्भ जल सलाहें समाना, यह तत कहो गयानी।

कबीर ने सर्वव्यापी ईश्वर की चर्चा की है, जो कण–कण में और हर शरीर में समाया हुआ है। इसके आधार पर जहाँ एकेश्वरवाद की स्थापना होती है, वहीं मानवतावाद का स्वरूप भी उभर आता है।

गुरु महिमा

कबीर ने गुरु को ब्रह्म से भी उपर और ब्रह्म प्राप्ति के पथ का मार्गदर्शक बताया है।

''गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविंद दियो बताए।''

इस दोहे से तात्पर्य है कि आपके समक्ष गुरु और ईश्वर दोनों विद्यमान हो तो पहले गुरु के चरणों में अपना शीश झुकाना चाहिए, क्योंकि गुरु ने ही हमें भगवान के पास पहुँचाने का ज्ञान प्रदान किया हैं।

राम नाम महिमा

कबीर दास का ईश्वर पर अटूट विश्वास और उनके प्रति अनन्य भक्ति है, उन्होंने अपने आराध्य के लिए विभिन्न नामों का प्रयोग किया है। जिनमें राम, साई, हरि, रहीम, खुदा अल्लाह आदि प्रमुख है। वे इन सभी नामों को पूर्ण श्रद्धाभाव से लेते हैं, उनके मन में सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार ईश्वर की अराधना का प्रबल स्वरूप विद्यमान था। वे हर व्यक्ति को जगाकर ईश्वर का भक्त बनाना चाहते थे। इसलिए कहते थे–

ज्यों तिल माहिं तेल ज्यों चकमक में आगि

तेरा साई तुज्झ में, जाग सकै तो जागि।

कबीर ने विभिन्न नामों में 'राम' नाम को पूरी गंभीरता से और बार–बार लिया है। यह सर्वविदित तथ्य है कि कबीर निर्गुण राम के उपासक हैं। वे बार–बार राम नाम स्मरण की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि –

कबीर निर्भय राम जपु, जब लोग दीवा बाते।
तेल घटा बाती बुझे, तब सोवो दिनराति।

इस साखी में कबीर दास कहते हैं कि जब तक दीपक में बाती है तब तक निर्भय होकर राम का जप कर। तेल खत्म हो जाने पर बत्ती बुझ जायेगा तब दिन–रात सोना पड़ेगा। इस साखी के जरिए कबीरदास जी ने निर्भय होकर ब्रह्म नाम जपने का उपदेश दिया है।

निष्कर्ष

कबीर की भक्ति–भावना में प्रेम को आकर्षक और प्रभावी महत्व दिया गया है। उनका मानना है कि मानव–प्रेम में भी ईश्वर की कृपा होती है। कण–कण में समाया राम ही मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रेरणाधार है। कबीर की भक्ति भावना सार्वलौकिक, सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। वह एक ओर अत्यंत सरल और सहज है, तो दूसरी ओर माया से आबद्ध होने पर सर्वाधिक कठिन और कष्टसाध्य भी है। इसका मुख्य कारण है कि कबीर की भक्ति भाव–प्रधान है। उनकी भक्ति में बाह्याडंबर और भौतिक विधानों को कोई स्थान नहीं दिया गया है। कबीर की भक्ति सहज है। वे ऐसे मंदिर के पुजारी हैं जिसकी फर्श हरी–घास, जिसकी दीवारें दसों दिशाएँ है, जिसके छत नीले आसमान की छतरी है। यह साधना स्थल सभी मनुष्य के लिए खुला है। कबीर की भक्ति में एकाग्र मन, सतत साधना, मानसिक पूजा–अर्चना, मानसिक जाप और सतसंगति को विशेष महत्व दिया गया है। यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि कबीर की भक्ति भावना मानवतावाद को प्रतिष्ठित करने वाली सहज और आकर्षक साधना भाव–मय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल, पुरूषोत्तम. *कबीर : साखी और सबद.* राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2025

चोपड़ा, सुदर्शन (संपा). *कबीर.* पेंग्विन बुक्स, नई दिल्ली, 2010

दास, श्यामसुन्दर. *कबीर ग्रंथावली.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010

द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *कबीर.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2020

राघव, रांगेय. *लोई का ताना.* राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, 2020

रघुवंश. *कबीर : एक नई दृष्टि.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009

शर्मा, राजकिशोर. *कबीर ग्रंथावली.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2020

साहा, रणजीत (अनु०). रवीन्द्रनाथ ठाकुर. *कबीर के सौ पद.* राधाकृष्ण प्रकाशन, इलाहाबाद, 2025

सक्सेना, द्वारका प्रसाद. *हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि.* विनोद पुस्तक मंदिर, दिल्ली, 2020

सिंह, जयपाल. *कबीर का युगपथ.* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2020